## Topic: - Non-Alignment Policy of India (NAM)

प्र० - भारत की गुटनिरपेक्षता नीति (NAM)
Non-Alignment Policy of India

उ० →

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में गुटनिरपेक्षता की नीति का महत्वपूर्ण योगदान है। गुटनिरपेक्षता शब्द को सर्वप्रथम लिस्का द्वारा वैज्ञानिक अर्थ प्रदान किया गया। इसके बाद अन्य विद्वानों ने अलग-2 इसको परिभाषित किया। वैसे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद शीतयुद्ध के रूप में गुटनिरपेक्षता नीति का जन्म हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका और सोवियत संघ में उभरे मतभेदों के कारण गुट-निरपेक्षता नीति का जन्म हुआ जिसका नेतृत्व पंडित जवाहरलाल नेहरू, युगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो तथा मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने किया। युद्ध के दौरान मित्र राष्ट्रों में धीरे-2 मतभेद उभरते गये, हालांकि इन मित्र राष्ट्रों ने एक साथ मिलकर धुरी राष्ट्रों को पराजित किया था, लेकिन युद्ध समाप्ति के बाद विश्व दो गुटों में बंट गया - एक अमेरिकी गुट और दूसरा सोवियत संघ गुट। एक पूंजीवादी का नेतृत्व किया तो दूसरा साम्यवादी का।

वैसे गुटनिरपेक्ष नीति का अर्थ था, गुटों की राजनीति से दूर रहना, दोनों गुटों से संबंध रखना, किसी के साथ सैनिक संधि न करते हुए उनके गलत नीतियों का विरोध करना। इसको परिभाषित करते हुए नेहरू ने कहा था - "गुटनिरपेक्षता का अर्थ है अपने आप को सैनिक गुटों से दूर रखना तथा जहां तक सम्भव हो तथ्यों को सैनिक दृष्टि से न देखना। यदि ऐसी आवश्यकता पड़े तो, स्वतंत्र दृष्टिकोण रखना तथा दूसरे देशों से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना गुटनिरपेक्षता के लिए आवश्यक है।" इसका अर्थ हुआ उचित और अनुचित का भेद जानकर उचित का साथ देना।

4. Sep. 1946 को पंडित नेहरू ने कहा था -

"हम अपनी इच्छा से इतिहास का निर्माण करेंगे।" प्रो० एम. एस. राजन ने लिखा है " गुटनिरपेक्षता का मूलरूप यह अर्थ है कि कोई देश अपने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन में और विशेषकर दो महाशक्तियों के प्रति अपनाई गई नीतियों के परिप्रेक्ष्य में पूरी तरह स्वतंत्र हो।"

भारत की गुटनिरपेक्षता नीति ⟶

यह स्पष्ट है कि गुटनिरपेक्षता आंदोलन का नेतृत्व भारत ने किया और यह नीति भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण अंग है। भारत की इस नीति को अपनाने के संबंध में पंडित नेहरू ने कहा था कि " जरा दुनिया के नक्शे की ओर देखो। यदि तुम मुख्यपूर्ण के नक्शे प्रश्नों पर विचार करोगे तो भारत को इससे बाहर नहीं रखा जा सकता। सुदूरपूर्व के बारे में भी यही बात है। तुम किसी भी क्षेत्र पर विचार करो, भारत की अनदेखी नहीं की जा सकती। भारत अपनी महानता पुनः प्राप्त कर रहा है।"

इस प्रकार भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति शांति का समर्थक है लेकिन विस्तारवादी नीति, उपनिवेशवादी नीति, जातिभेद, रंगभेद की नीति का विरोधी है। यह नीति बलप्रयोग सन्धि, समझौते का समर्थक नहीं है। बल्कि जो देश सही रूप से मानवीय दृष्टिकोण अपनाता है, उसकी प्रशंसा करता है। भारत की इस नीति का उद्देश्य तीसरे गुट का निर्माण करना नहीं था, बल्कि जो नये राष्ट्र स्वतंत्र हो रहे थे, उनकी अस्मिता और स्वतंत्रता के अस्तित्व को आगे बढ़ाना था, उनकी मदद करना था। आज भी भारत परमाणु प्रसार को रोकने और निःशस्त्रीकरण की प्रक्रिया को लेकर विश्वपटल पर अपनी नीति को रखता है।

वैसे अभी तक जितने भी राष्ट्राध्यक्ष हुए, सभी ने गुटनिरपेक्ष नीति के महत्व को समझा और नीति को आगे बढ़ाया। इन्दिरा गांधी ने अपने कार्यकाल में अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप का विरोध एवं शांति स्थापित करने पर जोर दिया। 1983-86 के सम्मेलन में इन्दिरा गांधी ने कहा कि महाशक्तियों से युद्ध शीतयुद्ध समाप्त किया

जाए, परमाणु अस्त्र होड़ को समाप्त किया जाए तथा निःशस्त्रीकरण के पक्ष में जनमत तैयार किया जाए।

1986 में राजीव गांधी ने बेलग्रेड सम्मेलन में विकसित राष्ट्रों से वार्ता करने के लिए संयुक्त मोर्चा बनाने का आग्रह किया। राजीव गांधी ने निर्गुट सम्मेलन में सभी देशों से पर्यावरण सुरक्षा पर बल दिया। पी०वी० नरसिंहाराव के समय में निःशस्त्रीकरण तथा राष्ट्रों के बीच असमानता (आर्थिक) दूर करने पर बल दिया गया। 1995 में कोलम्बिया सम्मेलन में भारत द्वारा परमाणु निःशस्त्रीकरण पर भारत के दृष्टिकोण को सभी राष्ट्रों ने स्वीकारा। अटल बिहारी वाजपेयी 1998 में डरबन में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया तथा पूर्ण नाभकीय निःशस्त्रीकरण पर भारत के दृष्टिकोण को विश्व के सामने रखा। मनमोहन सिंह ने बाण्डुंग सम्मेलन (2005) में भाग लिया और वैश्विक चुनौती के समाधान तथा आर्थिक मजबूती के लिए निर्गुट आंदोलन को मजबूत बनाने पर बल दिया। इस प्रकार विश्व व्यवस्था को न्यायसंगत बनाने के लिए यह आंदोलन अधिक प्रासंगिक है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में 25 और 26 अक्टूबर 2019 को 18वें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन जो अजरबैजान के बाकू में आयोजित हुआ, उसमें प्रधानमंत्री मोदी की जगह उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू गये जबकि 2016 में मोदी की जगह उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने हिस्सा लिया था। अतः 2016-19 तक भारत का प्रतिनिधित्व प्र० मंत्री मोदी ने नहीं किया। इस अरुचि के अनेक कारण हैं—

※ इस आंदोलन की उद्देश्य एकमत का अभाव दिख रहा है, आपस में ही गुटबंदी है।

※ गुटनिरपेक्षता के सदस्य राष्ट्र क्षेत्रीय गुटों का गठन कर रहे हैं। सभी गुट के अलग-2 उद्देश्य होते जा रहे हैं।

※ द० एशिया में आसियान, सार्क जैसे गुट सक्रिय हैं।

※ भारत और चीन राजनीतिक मतभेदों के बाद से प० देशों के साथ गुटबंदी कर रहे हैं।

※ इस आंदोलन में आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन

और शरणार्थी समस्या पर स्पष्ट एजेन्डा नहीं है।

* वर्तमान में भारत सभी देशों के साथ आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक समझौता कर रहा है।

वैसे यह आंदोलन सहयोग और रचनात्मक कार्यकलापों के आधार पर आगे बढ़ा लेकिन एन.डी.ए.सरकार ने इस आंदोलन से दूरी बना ली है। क्योंकि इस सम्मेलन में भाग मोदी जी नहीं ले रहे हैं। ~~इसके अनेक कारण~~ उदाहरण कारणों के अलावा अन्य कारण भी माने जाते हैं। सरकार इस बात की समीक्षा कर रही है कि इस सम्मेलन से अब तक क्या लाभ हुआ? दूसरा गुटनिरपेक्ष आंदोलन अमेरिका के खिलाफ माना जाता है, इसलिए मोदी अलग रहना चाहते हैं। तीसरा कारण है कि मोदी अमेरिका के साथ मित्रता कायम रखना चाहते हैं। चौथा यह है कि यह सम्मेलन वेनेजुएला में आयोजित है, जो अमेरिका का दुश्मन है। इन कारणों के अलावा यह भी कयास लगाये जा रहे हैं कि यह नीति मोदी की नहीं, नेहरू की है। इसलिए मोदी एक अन्य नीति का निर्माण चाहते हैं।

वैसे इस आंदोलन में रुचि नहीं रखते हुए भी आखिरकार पहली बार NAM वर्चुअल शिखर सम्मेलन में भाग लिया। यह सम्मेलन सदस्य अजरबैजान के राष्ट्रपति इल्हाम अलीयेव ने कोरोना वायरस के मुद्दे पर आपसी सहयोग के लिए बुलाया था। ज्ञातव्य है कि 2014 के बाद पहली बार मोदी इस सम्मेलन में शामिल हुए।

इस प्रकार आनेवाले समय में NAM का महत्व अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में क्या रहेगा, क्योंकि सभी सदस्य देशों में गुटबंदी हो गया। भारत का धीरे धीरे किनारा होना एक विचारणीय प्रश्न है। जबकि 2012 तक 120 देश इसके सदस्य हैं। देखना है कि मोदी सरकार की विदेश नीति में क्या सार्थक बदलाव किये जा रहे हैं।

Scanned by CamScanner